National Journal of
Hindi & Sanskrit Research

ISSN: 2454-9177
NJHSR 2026; 1(67): 112-117
© 2026 NJHSR
www.sanskritarticle.com

कृष्णा राम चौहान
शोधार्थी , हिंदी विभाग,
संत गहिरा गुरु विश्वविद्यालय,
अंबिकापुर (छ.ग.)

डॉ. कुसुमलता प्रजापति
सहायक प्राध्यापक ,
शा.कालिदास महाविद्यालय ,
प्रतापपुर (छ.ग.)

Correspondence:
कृष्णा राम चौहान
शोधार्थी , हिंदी विभाग,
संत गहिरा गुरु विश्वविद्यालय,
अंबिकापुर (छ.ग.)

"दीवार में एक खिड़की रहती थी" में यथार्थ और कल्पना का सौंदर्यबोध
(विनोद कुमार शुक्ल के उपन्यास के विशेष संदर्भ में)

कृष्णा राम चौहान, डॉ. कुसुमलता प्रजापति

सार-संक्षेप (Abstract)

विनोद कुमार शुक्ल हिंदी कथा-साहित्य के उन विरल रचनाकारों में हैं जिन्होंने यथार्थ और कल्पना के बीच प्रचलित द्वैत को रचनात्मक स्तर पर भंग कर दिया है। उनका उपन्यास "दीवार में एक खिड़की रहती थी" (1997, साहित्य अकादेमी पुरस्कार से सम्मानित) एक छोटे कस्बाई जीवन की रोज़मर्रा की सच्चाइयों को इस तरह कल्पनाशील भाषा में रूपांतरित करता है कि यथार्थ स्वयं काव्यात्मक और अतियथार्थ (surreal) हो उठता है। यह शोध-पत्र मूल पाठ के सम्यक् अध्ययन के आधार पर इस उपन्यास में यथार्थ और कल्पना के पारस्परिक गुम्फन, उसके सौंदर्यशास्त्रीय आधार, बिंब-विधान, भाषा-शिल्प, कथा-संरचना तथा दैनंदिन जीवन के काव्यीकरण की प्रक्रिया का विस्तृत विश्लेषण करता है। साथ ही यह भी देखने का प्रयास किया गया है कि शुक्ल की यह शैली पश्चिमी जादुई यथार्थवाद (Magic Realism), भारतीय उत्तर-आधुनिक उपन्यास-प्रवृत्तियों तथा हिंदी आधुनिकतावादी परंपरा से किस प्रकार भिन्न और मौलिक है। अध्ययन में आलोचनात्मक विश्लेषण पद्धति, तुलनात्मक दृष्टिकोण तथा उपलब्ध शोध-साहित्य के समीक्षात्मक उपयोग की पद्धति अपनाई गई है।

बीज-शब्द: - यथार्थ, कल्पना, सौंदर्यबोध, जादुई यथार्थवाद, बिंब-विधान, दैनंदिन जीवन, भाषा-शिल्प, उत्तर-आधुनिकता, विनोद कुमार शुक्ल

1. भूमिका

हिंदी उपन्यास की परंपरा में यथार्थवाद एक प्रमुख प्रवृत्ति के रूप में प्रेमचंद से लेकर आधुनिक कथाकारों तक विस्तृत रही है। किंतु यथार्थ को प्रस्तुत करने की पद्धतियाँ समय के साथ बदलती रही हैं। सामाजिक यथार्थवाद, मनोवैज्ञानिक यथार्थवाद, आंचलिक यथार्थवाद आदि के बाद विनोद कुमार शुक्ल ने एक ऐसी शैली विकसित की जिसे आलोचकों ने 'काव्यात्मक यथार्थवाद' अथवा 'जादुई यथार्थवाद की भारतीय छवि' के रूप में रेखांकित किया है। शुक्ल मूलतः कवि हैं, और उनकी गद्य-रचनाओं में कविता की सघनता, बिंबात्मकता तथा भाषिक नवाचार स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। "नौकर की कमीज़", "खिलेगा तो देखेंगे" और "दीवार में एक खिड़की रहती थी" जैसी कृतियाँ उनके इसी रचना-व्यक्तित्व की परिणति हैं।

"दीवार में एक खिड़की रहती थी" मध्य प्रदेश के एक छोटे कस्बे रायगढ़ जैसे परिवेश में रोपा गया प्रेम-उपन्यास है, जिसमें रघुवर और सोनसी की प्रेम-कथा के माध्यम से दैनंदिन जीवन की छोटी-छोटी घटनाओं बादल, हाथी, गली, दीवार, खिड़की, बारिश को इतनी गहराई और कोमलता से चित्रित किया गया है कि यथार्थ का धरातल कल्पना की उड़ान में बदल जाता है। शीर्षक स्वयं ही इस

सौंदर्यबोध का प्रतीक है: दीवार जैसी ठोस, जड़ और सीमाबद्ध वस्तु में एक खिड़की का 'रहना' यह क्रिया-प्रयोग असामान्य है, क्योंकि खिड़की सामान्यतः दीवार में 'होती' है, 'रहती' नहीं। इस सूक्ष्म भाषिक विचलन से ही उपन्यास की संपूर्ण सौंदर्य-दृष्टि का संकेत मिल जाता है।

इस उपन्यास को समझने के लिए सर्वप्रथम यह आवश्यक है कि इसे केवल कथानक के स्तर पर न देखा जाए। प्रस्तुत अध्ययन हेतु मूल कृति का समग्र, बार-बार पाठ किया गया, जिसमें प्रत्येक प्रसंग की भाषिक बनावट, वाक्य-दर-वाक्य लय, तथा बिंबों की पुनरावृत्ति को सूक्ष्मता से देखा गया। इस गहन पाठ से यह तथ्य उभरकर सामने आता है कि शुक्ल के यहाँ 'कथा क्या घटित होती है' इससे अधिक महत्वपूर्ण यह है कि 'कथा किस भाषा और दृष्टि से देखी-कही जाती है'। उपन्यास का अधिकांश आकर्षण उसके सूक्ष्म प्रसंगों में निहित है जैसे रघुवर का बादल को ताकना, सोनसी के घर की दीवार पर खिड़की का होना, गली में हाथी का अचानक प्रवेश जो पारंपरिक अर्थ में 'घटनाएँ' नहीं, बल्कि अनुभव के सूक्ष्म क्षण हैं, किंतु शुक्ल की भाषा में ये क्षण ही कथा के केंद्रीय आधार बन जाते हैं।

यह शोध-पत्र इस प्रश्न की पड़ताल करता है कि शुक्ल किस प्रकार यथार्थ को नकारे बिना उसे कल्पनाशील बना देते हैं, और इस प्रक्रिया में कौन-से भाषिक, संरचनात्मक तथा वैचारिक उपकरण कार्यरत हैं। साथ ही यह भी देखने का प्रयत्न किया गया है कि यह सौंदर्यबोध हिंदी की व्यापक आधुनिकतावादी-उत्तर-आधुनिकतावादी परंपरा तथा वैश्विक जादुई यथार्थवाद की प्रवृत्तियों से किस प्रकार संवाद करता है, और किस प्रकार उनसे पृथक भी होता है।

2. शोध का उद्देश्य एवं पद्धति

प्रस्तुत अध्ययन के मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित हैं(क) उपन्यास में यथार्थ और कल्पना के पारस्परिक संबंध का विश्लेषण करना; (ख) शुक्ल की भाषा-शैली तथा बिंब-योजना में निहित सौंदर्यबोध को रेखांकित करना; (ग) उपन्यास को भारतीय एवं वैश्विक जादुई यथार्थवादी परंपरा, हिंदी आधुनिकतावाद तथा उत्तर-आधुनिक प्रवृत्तियों के संदर्भ में स्थापित करना; (घ) दैनंदिन जीवन के काव्यीकरण की प्रक्रिया तथा कथा-संरचना की मौलिकता को समझना; (ङ) उपन्यास के चरित्र-चित्रण, स्थान-बोध तथा समय-बोध में निहित सौंदर्यबोधीय सूत्रों की पहचान करना। शोध-पद्धति के अंतर्गत सर्वप्रथम मूल उपन्यास का सम्यक् एवं समग्र पाठ किया गया, जिसमें कथानक, पात्र-योजना, भाषा-प्रयोग तथा बिंब-विधान को निकट से देखा-परखा गया। इसके पश्चात् विश्लेषणात्मक एवं तुलनात्मक आलोचना पद्धति अपनाई गई, जिसमें उपलब्ध अंतरराष्ट्रीय शोध-पत्रिकाओं में प्रकाशित समीक्षात्मक एवं तुलनात्मक अध्ययनों का समीक्षात्मक उपयोग करते हुए पाठ-केंद्रित विश्लेषण को व्यापक संदर्भ प्रदान किया गया है। इस प्रकार यह अध्ययन गुणात्मक (qualitative), पाठ-केंद्रित (text-centric) तथा अंतर-पाठीय (intertextual) पद्धति का समन्वय प्रस्तुत करता है।

3. विनोद कुमार शुक्ल: रचना-दृष्टि और भाषिक प्रयोगधर्मिता

विनोद कुमार शुक्ल (जन्म 1937, रायगढ़, छत्तीसगढ़) की रचना-प्रक्रिया की मूल विशेषता यह है कि वे साधारण से साधारण वस्तु, घटना अथवा संबंध को असाधारण दृष्टि से देखते हैं। उनकी भाषा में दोहराव, उलट-फेर, तथा वाक्य-विन्यास का असामान्य प्रयोग मिलता है, जो पाठक को परिचित यथार्थ को नए सिरे से देखने पर विवश करता है। उदाहरणस्वरूप, साधारण वस्तुओं और क्रियाओं को व्यक्तित्व प्रदान करना जैसे दीवार में खिड़की का 'रहना', बादल का 'आना-जाना' मानो किसी परिचित का आना-जाना हो शुक्ल की विशिष्ट शैलीगत मुद्रा है। आलोचक प्रायः इसे 'अनालंकारिक काव्यात्मकता' कहते हैं, क्योंकि यहाँ अलंकारों की सायास सज्जा नहीं, बल्कि साधारण भाषा में ही असाधारण दृष्टि का उन्मेष होता है।

शुक्ल की कथा-दुनिया में मनुष्य, प्रकृति और निर्जीव वस्तुओं के बीच कोई कठोर विभाजन-रेखा नहीं रहती। यह दृष्टि भारतीय लोक-चेतना और सहजबोध से गहरे रूप में जुड़ी हुई प्रतीत होती है, जिसमें वृक्ष, पशु-पक्षी, नदी-पर्वत सभी चेतन इकाइयों के रूप में व्यवहृत होते हैं। इसी कारण उनके यथार्थ-चित्रण में कल्पना कोई बाहरी अलंकरण नहीं, बल्कि देखने के ढंग का अंतरंग हिस्सा बन जाती है।

शुक्ल के कवि-व्यक्तित्व और कथाकार-व्यक्तित्व के बीच कोई कठोर सीमा-रेखा नहीं खींची जा सकती। उनकी कविताओं में जो संक्षिप्तता, बिंब-सघनता और शब्दों की मितव्ययिता मिलती है, वही गुण उनके उपन्यासों के गद्य में भी सक्रिय रहता है यद्यपि उपन्यास के विस्तार में वे गुण एक धीमी, प्रवहमान लय का रूप ले लेते हैं। उनके वाक्य प्रायः छोटे, सरल शब्दों से बने होते हैं, किंतु उनकी संरचना में एक सूक्ष्म वक्रता रहती है जो पाठक को धीमा करने, ठहरने और पुनः पढ़ने पर बाध्य करती है। यह 'धीमापन' (slowness) शुक्ल की कथा-पद्धति का एक केंद्रीय तत्त्व है वे कथा को द्रुत गति से आगे बढ़ाने के बजाय प्रत्येक क्षण में ठहरकर उसकी संभावनाओं को विस्तार से खोलते हैं।

यह उल्लेखनीय है कि शुक्ल अपने संपूर्ण लेखन-जीवन में रायपुर और उसके आसपास के छोटे कस्बाई-अर्ध-ग्रामीण परिवेश से जुड़े रहे, और उन्होंने महानगरीय जीवन अथवा बड़े शहरों की भव्यता को अपने कथा-संसार का केंद्र कभी नहीं बनाया। यह क्षेत्रीय निष्ठा

उनकी रचनाओं को एक विशिष्ट स्थानिक प्रामाणिकता प्रदान करती है, जिसमें मध्य भारत की छोटी बस्तियों का जीवन पड़ोस के संबंध, बाज़ार, गली, घर की वास्तुकला अत्यंत सूक्ष्मता और आत्मीयता के साथ उभरकर सामने आता है।

4. उपन्यास का संक्षिप्त परिचय और कथा-संरचना

"दीवार में एक खिड़की रहती थी" की कथा का केंद्र-बिंदु रघुवर और सोनसी का प्रेम-संबंध है, जो विवाह में परिणत होता है। किंतु उपन्यास की वास्तविक उपलब्धि कथानक की रैखिकता में नहीं, बल्कि उस सूक्ष्म, संवेदनशील गद्य में है जिसके माध्यम से प्रेम, स्मृति, घर, पड़ोस, कस्बा और प्रकृति को एक-दूसरे में अंतर्ग्रथित किया गया है। उपन्यास में पारंपरिक अर्थ में नाटकीय द्वंद्व या चरम-बिंदु प्रायः अनुपस्थित रहता है; इसके स्थान पर एक मंथर, चिंतनशील लय है जो छोटी-छोटी घटनाओं को विस्तार से, लगभग ध्यानावस्थित होकर, उकेरती है। यह संरचनात्मक चयन स्वयं इस तथ्य की पुष्टि करता है कि उपन्यास का अभिप्रेत यथार्थ की घटनात्मकता नहीं, बल्कि यथार्थ के भीतर छिपी कल्पना की संभावनाओं को उद्घाटित करना है।

कथा-संरचना के स्तर पर उपन्यास खंड-दर-खंड आगे बढ़ता है, जिसमें प्रत्येक खंड स्वयं में एक लघु काव्य-इकाई के समान प्रतीत होता है। समय का प्रवाह यहाँ रैखिक होते हुए भी अनेक स्थानों पर शिथिल और वृत्ताकार हो जाता है स्मृति और वर्तमान, प्रतीक्षा और घटित होने के बीच की सीमाएँ धुंधली पड़ जाती हैं। यह संरचना मिखाइल बाख्तिन की 'क्रोनोटोप' (chronotope) की अवधारणा की याद दिलाती है, जिसमें समय और स्थान कथा के भीतर एक अविभाज्य इकाई के रूप में कार्य करते हैं। शुक्ल के उपन्यास में कस्बे का भूगोल गलियाँ, घर, दीवारें, आँगन समय के अनुभव के साथ इस प्रकार घुल-मिल जाता है कि स्थान स्वयं एक चरित्र के समान सक्रिय हो उठता है।

पात्र-योजना के स्तर पर भी उपन्यास पारंपरिक प्रेम-कथाओं से भिन्न मार्ग अपनाता है। रघुवर और सोनसी के अतिरिक्त परिवार, पड़ोसी और कस्बे के अन्य निवासी भी कथा में सहज रूप से प्रवेश करते हैं, किंतु वे कभी भी मुख्य कथा-रेखा को बाधित अथवा जटिल नहीं करते; बल्कि वे उस सामूहिक, साझा कस्बाई जीवन की रचना करते हैं जिसके भीतर रघुवर-सोनसी का प्रेम पनपता है। इस प्रकार व्यक्तिगत प्रेम-संबंध और सामूहिक कस्बाई जीवन के बीच कोई विरोध नहीं, बल्कि एक सहज सातत्य स्थापित होता है जो स्वयं इस तथ्य का प्रतीक है कि शुक्ल के यहाँ व्यक्ति और समाज, अंतरंग और बाह्य के बीच की दीवारें भी, शीर्षक की खिड़की की भाँति, पारगम्य (permeable) हैं।

5. यथार्थ और कल्पना का सौंदर्यबोधात्मक संगम

5.1 दैनंदिन जीवन का काव्यीकरण

शुक्ल के यहाँ यथार्थ कभी भी 'यथार्थ के लिए यथार्थ' नहीं रहता; वह सदैव कल्पना की एक परत से आवेष्टित रहता है। रघुवर का बादल को देखकर बातें करना, सोनसी से बादल के माध्यम से संवाद स्थापित करने की कल्पना करना ये दृश्य अपने मूल रूप में अत्यंत यथार्थपरक (एक प्रेमी का प्रकृति के प्रति आकर्षण) हैं, परंतु शुक्ल की भाषा उन्हें इस तरह प्रस्तुत करती है कि वे काव्यात्मक कल्पना के धरातल पर पहुँच जाते हैं। इस प्रक्रिया को 'दैनंदिन का काव्यीकरण' (poeticisation of the quotidian) कहा जा सकता है, जिसमें घर-गृहस्थी की सामान्य वस्तुएँ दीवार, खिड़की, छत, आँगन प्रतीकात्मक अर्थ-गरिमा प्राप्त कर लेती हैं।

यह काव्यीकरण किसी अतिरिक्त अलंकरण अथवा अलंकारिक भाषा के सायास प्रयोग से नहीं होता, बल्कि देखने और वर्णन करने की पद्धति में निहित एक मौलिक परिवर्तन से उत्पन्न होता है। शुक्ल वस्तु का वर्णन उसके भौतिक गुणों के आधार पर नहीं, बल्कि उसके साथ पात्र के संबंध के आधार पर करते हैं। इस प्रकार खिड़की केवल लकड़ी और शीशे की बनी वस्तु नहीं रह जाती, बल्कि वह सोनसी की प्रतीक्षा, रघुवर की आकांक्षा और दोनों के बीच की दूरी एवं निकटता का सूक्ष्म मापदंड बन जाती है। यही प्रक्रिया दैनंदिन यथार्थ को कल्पना की कोटि में रूपांतरित करती है यथार्थ अपरिवर्तित रहते हुए भी अपने अर्थ-वलय में विस्तृत हो जाता है।

5.2 वस्तुओं का सजीवीकरण और बिंब-विधान

उपन्यास में निर्जीव वस्तुओं को सजीव क्रियाओं से जोड़ने की प्रवृत्ति बार-बार दिखाई देती है। दीवार में खिड़की का 'रहना' इस बात का संकेत है कि घर की भौतिक संरचना भी पात्रों की भावनात्मक दुनिया में सहभागी बन जाती है। यह सजीवीकरण (animation) कोई अतिरंजित कल्पना-क्रीड़ा नहीं, बल्कि एक सूक्ष्म सौंदर्यबोध है जो वस्तु और भाव के बीच की दूरी को पाटता है। हाथी का बार-बार कस्बे में प्रवेश करना जिसे आलोचकों ने वन और मानव-बस्ती के बीच के तनाव तथा प्रकृति की 'पराई' उपस्थिति के प्रतीक के रूप में पढ़ा है—भी इसी सजीवीकरण-प्रक्रिया का विस्तार है। हाल के एक शोध-अध्ययन में गोल्डिंग ने इस उपन्यास और मनोज रूपड़ा के उपन्यास 'काले अध्याय' की तुलना करते हुए दर्शाया है कि दोनों उपन्यासों में हाथी वन की 'अन्यता' (otherness) तथा मानव-जगत से उसके जटिल और विरोधाभासी संबंध का प्रतीक बनकर उभरता है, और शुक्ल के उपन्यास में यह छवि कस्बे के आदर्शीकृत ग्रामीण-काव्यात्मक चित्रण को भी एक हद तक विचलित करती है।[1]

यह दृष्टि महत्त्वपूर्ण है क्योंकि यह स्पष्ट करती है कि शुक्ल का यथार्थ-कल्पना-संगम केवल सुखद, रूमानी सौंदर्यबोध तक सीमित नहीं है; उसमें मध्य भारत के वन, आदिवासी जीवन और कस्बाई आधुनिकता के बीच के अंतर्विरोध भी अंतर्निहित रूप से उपस्थित रहते हैं, भले ही वे प्रत्यक्ष सामाजिक-राजनीतिक कथ्य के रूप में सामने न आएँ। हाथी की उपस्थिति इस अर्थ में एक द्विअर्थी बिंब है वह एक ओर तो विस्मय और कल्पना का स्रोत है, दूसरी ओर वह उस वन्य संसार की याद भी दिलाता है जिसे कस्बाई आधुनिकता निरंतर हाशिए पर धकेलती जा रही है। शुक्ल इस द्वंद्व को सीधे तौर पर वैचारिक भाषा में व्यक्त नहीं करते, बल्कि उसे बिंब के स्तर पर ही, मौन रूप से, पाठक के बोध पर छोड़ देते हैं जो उनकी कथा-पद्धति की एक मौलिक विशेषता है।

5.3 भाषा-शिल्प: दोहराव, विचलन और नवीन वाक्य-विन्यास

शुक्ल की भाषा अपने दोहराव-प्रधान वाक्य-गठन के लिए विशेष रूप से उल्लेखनीय है। एक ही शब्द या वाक्यांश को थोड़े परिवर्तन के साथ बार-बार दुहराना उनकी भाषा की लयात्मकता को जन्म देता है, और साथ ही पाठक के सामान्य भाषिक प्रत्याशा को भंग कर एक नई बोधात्मक सजगता उत्पन्न करता है। व्याकरणिक दृष्टि से असामान्य प्रयोग जैसे क्रिया का अप्रत्याशित कारक के साथ संयोजन शुक्ल के यहाँ केवल भाषिक नवाचार नहीं, बल्कि दर्शन का वाहक बन जाता है: वस्तुएँ केवल 'होती' नहीं, वे 'रहती' हैं, 'बसती' हैं, मानो उनका भी एक स्वतंत्र अस्तित्व और संबंध-जगत हो। इस प्रकार भाषा स्वयं यथार्थ और कल्पना के बीच की सीमा-रेखा को धुंधला करने का माध्यम बन जाती है।

शुक्ल के वाक्यों में अक्सर एक प्रकार की 'तर्क-शृंखला' (logical chain) दिखाई देती है, जिसमें एक कथन से अगला कथन लगभग गणितीय निष्ठा से, किंतु अप्रत्याशित दिशा में, विकसित होता है। उदाहरणार्थ, यदि दीवार में खिड़की 'रहती' है, तो यह तार्किक रूप से यह भी संभव बना देता है कि खिड़की दीवार से कहीं और 'चली जाए' अथवा खिड़की का अपना एक 'मन' हो। इस प्रकार की भाषिक तार्किकता, जो सामान्य अर्थ में अतार्किक प्रतीत होती है, वस्तुतः एक नई काव्यात्मक तर्क-पद्धति की रचना करती है, जिसमें कल्पना यथार्थ के तर्क का ही विस्तार बन जाती है, उसका विरोधाभास नहीं।

5.4 कथन-शैली और दृष्टिकोण (narrative voice)

उपन्यास की कथन-शैली प्रायः तृतीय पुरुष में है, किंतु यह तृतीय पुरुष कथन पारंपरिक सर्वज्ञ कथावाचक (omniscient narrator) की दूरी नहीं रखता; बल्कि वह पात्रों की आंतरिक संवेदना के अत्यंत निकट रहकर, लगभग उनके भीतर से ही, संसार को देखता-वर्णित करता है। इस निकटता के कारण पाठक को यह आभास होता है कि वह स्वयं रघुवर अथवा सोनसी की आँखों से कस्बे को देख रहा है, और इसी कारण साधारण दृश्य भी असाधारण भावनात्मक सघनता प्राप्त कर लेते हैं। यह कथन-शैली, जो यथार्थ और आंतरिक कल्पना के बीच की दूरी को निरंतर कम करती रहती है, स्वयं उपन्यास के केंद्रीय सौंदर्यबोध की संरचनात्मक अभिव्यक्ति है।

6. वैश्विक जादुई यथार्थवाद और शुक्ल की भारतीय मौलिकता

जादुई यथार्थवाद (Magic Realism) की अवधारणा मूलतः लातिन अमेरिकी साहित्य, विशेषतः गाब्रिएल गार्सिया मार्केज़ की रचनाओं से जुड़ी है, जिसमें अतिप्राकृतिक तत्त्व यथार्थवादी परिवेश में स्वाभाविक रूप से घटित होते हैं। भारतीय अंग्रेज़ी कथा-साहित्य में सलमान रुश्दी के उपन्यास "Midnight's Children" को इस परंपरा के एक प्रमुख उदाहरण के रूप में देखा गया है, जहाँ जादुई यथार्थवाद उत्तर-औपनिवेशिक पहचान और राष्ट्र-निर्माण के द्वंद्वों को अभिव्यक्त करने वाली एक वैचारिक रणनीति के रूप में कार्य करता है।[2] इसी प्रकार समकालीन भारतीय कथा-साहित्य में पौराणिक कथा-तत्त्वों और जादुई यथार्थवाद के संयोजन से मिथकीय आख्यानों के पुनर्पाठ की प्रवृत्ति भी देखी गई है, जिसमें अलौकिक तत्त्व यथार्थ से पृथक न होकर उसी में घुले-मिले रहते हैं।[3]

इन उदाहरणों की तुलना में विनोद कुमार शुक्ल की कथा-पद्धति महत्त्वपूर्ण रूप से भिन्न है। शुक्ल के उपन्यास में कोई अतिप्राकृतिक या चमत्कारिक घटना नहीं घटती न भूत-प्रेत, न दैवीय हस्तक्षेप, न समय का विघटन। उनका 'जादू' यथार्थ के बाहर से नहीं आता, बल्कि यथार्थ की भीतरी बनावट में, भाषा और दृष्टि के स्तर पर उत्पन्न होता है। इसे 'सूक्ष्म जादुई यथार्थवाद' अथवा अधिक उपयुक्त रूप से 'काव्यात्मक यथार्थवाद' कहना समीचीन होगा, क्योंकि यहाँ अतिशयोक्तिपूर्ण कल्पना के स्थान पर संवेदनशील अवलोकन और भाषिक रूपांतरण के माध्यम से ही यथार्थ कल्पनाशील बनता है। यह अंतर शुक्ल के सौंदर्यशास्त्र की मौलिकता को रेखांकित करता है वे पश्चिमी जादुई यथार्थवाद की नकल नहीं करते, बल्कि भारतीय कस्बाई-ग्रामीण संवेदना से एक स्वतंत्र काव्य-गद्य परंपरा विकसित करते हैं।

यह भी उल्लेखनीय है कि शुक्ल का यह काव्यात्मक यथार्थवाद किसी पलायनवादी रूमानियत में परिणत नहीं होता। गोल्डिंग के अध्ययन से यह संकेत मिलता है कि शुक्ल के उपन्यास में मध्य भारत की प्रकृति, क्षेत्रीयता और निम्न-मध्यवर्गीय कस्बाई जीवन की जटिलताएँ भी अंतर्निहित रूप से उपस्थित हैं, भले ही वे आदिवासी विस्थापन जैसी रचनाओं की तरह प्रत्यक्ष राजनीतिक तीव्रता के साथ सामने न आएँ।[4] इस प्रकार शुक्ल का सौंदर्यबोध यथार्थ से पलायन नहीं, बल्कि यथार्थ को अधिक गहराई और संवेदनशीलता से देखने का एक मार्ग है।

उल्लेखनीय यह भी है कि भारतीय अंग्रेज़ी उपन्यास की प्रचलित आलोचना-दृष्टि अक्सर यह मान लेती है कि आधुनिक भारतीय जीवन की जटिलता को व्यक्त करने में समर्थ साहित्य अंग्रेज़ी में ही, विस्तृत, बहु-स्वरीय और अतिरंजित रूप में लिखा जा सकता है। ओर्सिनी ने इस प्रचलित मान्यता पर प्रश्नचिह्न लगाते हुए दिखाया है कि यह धारणा हिंदी, तमिल, बांग्ला और उर्दू जैसी भारतीय भाषाओं की साहित्यिक उपलब्धियों को हाशिए पर डाल देती है, और भारतीय जीवन के यथार्थ को अनिवार्यतः 'विशाल, बहुस्वरीय और अतिशयोक्तिपूर्ण' रूप में ही प्रस्तुत किए जाने की अपेक्षा रखती है।[5] शुक्ल का उपन्यास इस अपेक्षा का ठीक विलोम प्रस्तुत करता है वह विस्तृत, घटनाबहुल अथवा कोलाहलपूर्ण न होकर अत्यंत मंद्र, सूक्ष्म और मौन सौंदर्यबोध की रचना करता है, और इसी मौनता में उसकी कल्पनाशीलता निवास करती है। यह तथ्य भारतीय भाषाओं के साहित्य की उस मौलिक शक्ति को रेखांकित करता है जो भव्यता के बिना भी गहन काव्यात्मकता उत्पन्न कर सकती है।

7. हिंदी आधुनिकतावाद, उत्तर-आधुनिकता और शुक्ल की स्थिति

शुक्ल के कथा-शिल्प को समझने के लिए हिंदी कथा-साहित्य की आधुनिकतावादी और उत्तर-आधुनिकतावादी प्रवृत्तियों के व्यापक संदर्भ को भी ध्यान में रखना आवश्यक है। हिंदी आधुनिकतावाद की उत्पत्ति को लेकर हुए अध्ययनों से यह स्पष्ट होता है कि स्वातंत्र्योत्तर हिंदी आधुनिकतावादी कविता और गद्य में बहुभाषिक तथा बहु-सांस्कृतिक प्रभावों (विशेषतः उर्दू परंपरा) के सूक्ष्म चिह्न विद्यमान रहे हैं, जो एकभाषिक राष्ट्रीय साहित्य की प्रचलित अवधारणा को जटिल बनाते हैं।[6] शुक्ल की भाषा में भी यद्यपि उर्दू-मिश्रित शब्दावली प्रत्यक्ष रूप से प्रमुख नहीं है, तथापि उनकी वाक्य-रचना में मौजूद प्रयोगधर्मिता, परंपरागत व्याकरणिक प्रत्याशाओं का विचलन, और भाषा को नए सिरे से गढ़ने की प्रवृत्ति उसी प्रयोगवादी-आधुनिकतावादी विरासत से जुड़ती हुई प्रतीत होती है, जिसे अज्ञेय, मुक्तिबोध और अन्य प्रयोगवादी कवियों ने प्रतिष्ठित किया था।

दूसरी ओर, समकालीन हिंदी उपन्यास में उत्तर-आधुनिक प्रवृत्तियों की पहचान करने वाले अध्ययन (यथा घिरार्दी का शोध ('Postmodern Traces and Recent Hindi Novels') यह दर्शाते हैं कि हाल के हिंदी उपन्यासों में रैखिक कथा-संरचना का विघटन, आत्म-सजग कथन-शैली (self-reflexive narration) तथा भाषिक प्रयोगधर्मिता की प्रवृत्तियाँ बढ़ी हैं, जो वैश्विक उत्तर-आधुनिक साहित्यिक प्रवृत्तियों से साम्य रखती हैं, किंतु अपनी सांस्कृतिक विशिष्टता भी बनाए रखती हैं।[7] शुक्ल का उपन्यास भी इस अर्थ में उत्तर-आधुनिक स्पर्श रखता प्रतीत होता है कि वह कथा को नाटकीय द्वंद्व अथवा घटनात्मक चरमोत्कर्ष पर आधारित न करके, भाषा और दृष्टि की केंद्रीयता पर आधारित करता है किंतु इसके साथ ही वह उत्तर-आधुनिक साहित्य की प्रायः मिलने वाली विडंबनात्मकता (irony), विखंडन (fragmentation) अथवा संशयवाद से दूर, एक गहरी आस्थामूलक कोमलता को संजोए रखता है। यही कोमलता शुक्ल को विशुद्ध उत्तर-आधुनिक कथाकारों से पृथक करती है और उन्हें एक स्वतंत्र, मौलिक सौंदर्यबोध की श्रेणी में स्थापित करती है।

समकालीन हिंदी-अंग्रेज़ी कथा-साहित्य में नगरीय परिवेश और प्रयोगात्मक रूपों के अध्ययन से यह भी संकेत मिलता है कि नई शताब्दी के लेखक प्रायः कथा और गैर-कथा, गद्य और काव्य के बीच की पारंपरिक सीमाओं को चुनौती देते हुए नई शैलीगत संभावनाओं की खोज कर रहे हैं, विशेषतः शहर और स्थान के बदलते बोध को अभिव्यक्त करने हेतु।[8] यद्यपि यह अध्ययन मुख्यतः महानगरीय (दिल्ली-केंद्रित) लेखन पर केंद्रित है, फिर भी इसकी अंतर्दृष्टि शुक्ल के कस्बाई परिवेश पर भी आंशिक रूप से लागू होती है जहाँ गद्य और काव्य के बीच की सीमा-रेखा धुंधली होकर एक नए कथा-मुहावरे को जन्म देती है, यद्यपि शुक्ल का संदर्भ महानगरीय विडंबना के स्थान पर कस्बाई शांति और आत्मीयता से संचालित है।

8. प्रेम, घर और प्रकृति: कल्पना के तीन आधार-स्तंभ

उपन्यास में कल्पना के उन्मेष के तीन प्रमुख आधार दिखाई देते हैं प्रेम, घर और प्रकृति। रघुवर-सोनसी का प्रेम-संबंध शुक्ल की कलम से गुज़रकर एक ऐसी कोमलता प्राप्त करता है जिसमें स्पर्श, दूरी, प्रतीक्षा और स्मृति सभी एक काव्यात्मक बुनावट में गुँथ जाते हैं। शुक्ल के यहाँ प्रेम कोई नाटकीय उद्वेलन नहीं, बल्कि एक मंद्र, निरंतर प्रवहमान अनुभूति है, जो पात्रों के संपूर्ण परिवेश बादल, गली, खिड़की में फैल जाती है। प्रेम की यह व्याप्ति ही उपन्यास के यथार्थ को कल्पनाशील बनाती है, क्योंकि प्रेमी-मन के लिए संसार की प्रत्येक वस्तु अर्थ-गर्भित और सजीव हो उठती है।

'घर' की अवधारणा भी इस उपन्यास में केवल भौतिक आश्रय नहीं, बल्कि भावनात्मक और कल्पनाशील स्थान बन जाती है दीवार, खिड़की, छत सभी पात्रों के साथ एक रिश्ते में बंध जाते हैं।[9] घर की यह संकल्पना पारंपरिक हिंदी उपन्यास की उस प्रवृत्ति से भिन्न है जिसमें घर प्रायः सामाजिक संरचना, जाति, वर्ग अथवा पारिवारिक सत्ता-संबंधों के प्रतिनिधि स्थल के रूप में चित्रित होता है। शुक्ल के यहाँ घर एक अंतरंग, लगभग ध्यानस्थ अनुभव-स्थल है, जिसमें वास्तुकला और भावना के बीच की दूरी विलीन हो जाती है।

प्रकृति- बादल, बारिश, हाथी, पेड़ मनुष्य-जगत के समानांतर एक स्वतंत्र, किंतु संवादरत उपस्थिति के रूप में प्रकट होती है। यह प्रकृति-चित्रण न तो विशुद्ध रूप से रूमानी है और न ही पारिस्थितिक संकट-केंद्रित; बल्कि यह मानव और प्रकृति के बीच एक सहचर-भाव (companionship) की रचना करता है, जिसमें हाथी जैसा विशाल और 'अन्य' प्राणी भी कस्बाई जीवन के ताने-बाने में एक विचलनकारी, किंतु आत्मीय उपस्थिति के रूप में प्रवेश करता है।[10] ये तीनों आधार प्रेम, घर और प्रकृति मिलकर उस सौंदर्यबोध की रचना करते हैं जिसमें यथार्थ अपनी ठोसता खोए बिना कल्पना के साथ निरंतर संवाद करता है।

9. निष्कर्ष

"दीवार में एक खिड़की रहती थी" विनोद कुमार शुक्ल की उस विशिष्ट रचना-दृष्टि का प्रतिनिधि उपन्यास है जिसमें यथार्थ और कल्पना परस्पर विरोधी नहीं, बल्कि परस्पर पूरक तत्त्व के रूप में कार्य करते हैं। मूल पाठ के समग्र अध्ययन और उपलब्ध शोध-साहित्य के तुलनात्मक विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि शुक्ल का सौंदर्यबोध न तो शुद्ध यथार्थवादी है और न ही पारंपरिक अर्थ में जादुई यथार्थवादी; वह एक तीसरी, अधिक सूक्ष्म कोटि का है, जिसे 'काव्यात्मक यथार्थवाद' कहा जाना अधिक उपयुक्त प्रतीत होता है। भाषिक दोहराव, वस्तुओं का सजीवीकरण, असामान्य वाक्य-विन्यास तथा दैनंदिन जीवन के प्रति गहन, ध्यानमग्न दृष्टि ये सभी मिलकर शुक्ल के गद्य को एक ऐसा माध्यम बनाते हैं जिसमें साधारण कस्बाई जीवन असाधारण काव्यात्मक अनुभव में रूपांतरित हो जाता है।

यह अध्ययन यह भी स्थापित करता है कि शुक्ल की यह शैली न तो पश्चिमी जादुई यथार्थवाद की अनुकृति है, न रुश्दी-शैली के बहुस्वरीय, अतिशयोक्तिपूर्ण उत्तर-औपनिवेशिक आख्यान की, और न ही विशुद्ध उत्तर-आधुनिक विडंबना अथवा विखंडन की; बल्कि वह हिंदी की अपनी आधुनिकतावादी-प्रयोगवादी विरासत से अनुप्राणित होकर एक मौलिक, क्षेत्र-विशिष्ट काव्य-गद्य परंपरा की रचना करती है। इस अर्थ में यह उपन्यास हिंदी कथा-साहित्य में यथार्थ और कल्पना के संबंध को पुनर्परिभाषित करने वाली एक महत्त्वपूर्ण कृति है, जो आगे के शोध के लिए भी पर्याप्त संभावनाएँ खोलती है विशेषतः पारिस्थितिक आलोचना (ecocriticism), क्षेत्रीयता-अध्ययन, भाषा-दर्शन तथा तुलनात्मक विश्व-साहित्य के अंतरानुशासनिक दृष्टिकोणों से। अंततः यह कहा जा सकता है कि शुक्ल का सौंदर्यबोध हमें यह सिखाता है कि कल्पना यथार्थ से पलायन का नहीं, बल्कि उसे अधिक गहराई, कोमलता और सजगता से देखने का मार्ग है।

संदर्भ-सूची

1. Goulding, Gregory. "The Imagination of the Forest and the Fear of the Land: The Idea of Nature in Recent Hindi Fiction." South Asia: Journal of South Asian Studies, 2024.
2. Kumar, Rahul. "Magic Realism and Postcolonial Identity in Salman Rushdie's Midnight's Children." International Journal of Advanced Research, 2026.
3. Rani, Diksha et al. "Reimagining Myth through Magical Realism: A Critical Exploration of Mythological Symbolism and Narrative Enchantment in the Novels of Ashwin Sanghi." International Journal of Scientific Research in Science, Engineering and Technology, 2026.
4. Ghirardi, Veronica. Postmodern Traces and Recent Hindi Novels. Vernon Press, Wilmington, 2021 (समीक्षा: T. Dähnhardt, 2021)।
5. Goulding, Gregory. "Hindi After Urdu: North Indian Modernisms and the Multiple Poetics of Fragmentation." Modernism/modernity, 2025.
6. Kumar, S. "Exploring Modernism as Reflected in Post-partition Hindi/Urdu Fiction." 2018.
7. Orsini, F. "India in the Mirror of World Fiction." 2002.
8. Khanna, S. "Desire and Disappearance in Delhi." Journal of Postcolonial Writing, 2018.
9. शुक्ल, विनोद कुमार. दीवार में एक खिड़की रहती थी. राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, 1997।
10. शुक्ल, विनोद कुमार. नौकर की कमीज़. राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, 1979।